IJAER/ September-October 2021 /Volume-10/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

हिंदी पत्रकारिता के नए आयाम

नीलम यादव

दिल्ली विश्वविद्यालय

सार

वर्तमान में हम अपने अधिकारों व कर्त्तव्यों के प्रति सजग हो गये है ं जिसका जीवन्त उदाहरण लोकपाल विधेयक और महिलाओं की रक्षा हेतु बने सशक्त कानून है ं। जनचेतना का जो अंकुर समाज में प्रस्फुटित हुआ है वह सराहनीय व दर्शनीय है। राजस्थान में हिन्दी पत्रकारिता में आज राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, नवज्योति आदि समाचार पत्र न केवल सूचना देने का कार्य कर रहे है अपितु स्वास्थ्य, शिक्षा, नैतिकता, देश के प्रति नागरिकों के कर्त्तव्य आदि की चेतना का प्रचार प्रसार भी समाज में कर रहे है ं और यह प्रक्रिया सुचारू रूप से जारी रहेगी। शोध में प्रमुख पत्रकारो के योगदान का भी उल्लेख किया गया है ताकि हम भी उन से प्रेरित होकर जनचेतना के विकास में हि ंदी पत्रकारिता के द्वारा सहयोग प्रदान कर सके। पत्रकार व पाठक दोनों से ही जनचेतना के विकास में सहयोग की अपेक्षा की जाती है। मेरे द्वारा अपने शोध विषय ''राजस्थान में हिन्दी पत्रकारिता और जनचेतना'' को चरिताथ करने का पूर्ण प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से अनेक अनछुए तथ्यों को पाठकों के समक्ष रखना चाहा है।

मुख्य शब्दः *हिंदी पत्रकारिता* ,

परिचय

स्वतन्त्रता से पूर्व राजस्थान के पत्रों के सामने हिन्दी पत्रकारिता के आदर्श पत्रों का अभाव था। उनके सामने ऐसा कोई पत्र नही था, जिसका अनुसरण करके वे समाचार पत्रों के प्रकाशन का आरम्भ करते। सन् 1900 के आस–पास जब हिन्दी प्रदेशों में अच्छे पत्र निकलने लगे तो उनका प्रभाव राजस्थान पर भी पड़ा और तभी यहाँ कुछ अपवादों को छोड ़कर सामाजिक एवं राजनीतिक चेतनामूलक पत्र निकलने लगे। राजस्थान में पत्रकारिता के प्रादुर्भाव में होने वाले विलम्ब के इन कारणों के होते हुए भी यह कहना उपयुक्त होगा कि भले ही राजस्थान में पत्रकारिता का श्रीगणेश विलम्ब से हुआ और भले ही यहाँ के पत्र दीर्घजीवी नही ं हो सके, तथापि राजस्थान जैसे पिछड़े हुए प्रदेश में इन पत्रों ने लोकजागरण का जो अलख जगाया, वह ऐतिहासिक महत्त्व का है। इन पत्रों ने न केवल सामाजिक एवं धार्मिक सुधारों के आन्दोलनों को स्वर दिया, अपितु, स्वतंत्रता संग्राम के लिए किए गए विभिन्न जन–आंदोलनो ं को भी अपना समर्थन दिया। काका कालेलकर ने पत्रकार परिषद् मे ं अहमदाबाद के एक अधिवेशन में ''पत्रकार दीक्षा'' शीर्षक अपने पत्र के वाचन में कहा था– ''पत्रकार उस समय एक साथ लोक सेवक, ला`क प्रतिनिधि, ला`कनायक और लोकगुरु की भूमिका अदा कर रहे थे।''

पत्रकारिता का अर्थ – पत्रकारिता का अर्थ – किसी विचार या संदेश को अधिंकाशतः एवं सुदूर व्यक्तियो (जन–जन) तक किसी माध्यम के द्वारा प्रसारित करना ही पत्रकारिता है। समय और समाज के संदर्भ में सजग रहकर नागरिकों मे ं दायित्व–बोध पैदा कराना व समाज में घटित घटनाओं व उनसे सम्बन्धित विचारों से नागरिकों को अवगत कराने की कला ही पत्रकारिता है। आधुनिक समय मे ं पत्रकारिता भ्रष्टाचार रूपी तंत्र के लिए ब्रह्मास्त्र का स्वरूप धारण किये हुए है। पत्रकारिता को विभिन्न विद्वानो द्वारा परिभाषित किया गया है जो निम्नलिखित है –

'पत्रकारिता के लिए अंग्रेजी में जर्नलिज्म शब्द प्रयोग में लाया जाता है जो जर्नल से निकला है जिसका शाब्दिक अर्थ 'दैनिक' है। दिन–प्रतिदिन के क्रिया–कलापों, सरकारी बैठकों का विवरण 'जर्नल' में रहता है। 17वी ं एवं 18वी ं सदी मे ं

पीरियाडिकल के स्थान पर लैटिन शब्द 'डियूरनल' और 'जर्नल' शब्दो का प्रयोग हुए। जर्नल से बना जर्नलिज्म अपेक्षाकृत व्यापक शब्द है। समाचार पत्रों एवं विधिक कालिक पत्रिकाओं के सम्पादन एवं लेखन और तत्सम्बन्धी कार्यों को पत्रकारिता के अन्तर्गत ही रखा जाता है। इस प्रकार समाचारों का संकलन, प्रसारण, विज्ञापन की कला एवं पत्र का व्यावसायिक संगठन पत्रकारिता है।''1

जर्नलिज्म से पहले पत्रकारिता का शाब्दिक अर्थ – संस्कृत के शब्द 'पत्र' से इसे गृहीत माना जा सकता है। इसमें 'कृ' धातु मे ं णिनि + तल + टाप प्रत्ययों के योग से पत्रकारिता शब्द बनता है। पत्र के साथ ही 'पत्रिका' शब्द का प्रयोग भी प्रचलन में है। ''जर्नलिज्म फ्रैंच शब्द जर्नी से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ होता है, एक–एक दिवस का कार्य या उसकी विवरणिका प्रस्तुत करना।2 चैम्बर और न्यू वेब्स्टर्स डिक्शनरी के अनुरूप प्रकाशन, सम्पादन, लेखन एवं प्रसारणयुक्त समाचार माध्यम का व्यवसाय ही पत्रकारिता है।

पत्रकारिता अभिव्यक्ति की एक मनोरम कला है। इसका कार्य जनता तथा जन–नेताओं के समक्ष लोक–कल्याण सम्बन्धी कायों की सूची प्रस्तुत करना है।''4 सी.जी. मुलर–''सामायिक ज्ञान का व्यवसाय ही पत्रकारिता है। इसमें तथ्यों की प्राप्ति, उनका मूल्या ंकन एव ं ठीक–ठीक प्रस्तुतीकरण हा ेता है।''5 डॉ. बद्रीनाथ कपूर–''पत्रकारिता पत्र– पत्रिकाओं के लिए समाचार–लेख आदि एकत्रित करने, सम्पादित

करने एवं प्रकाशन का आदेश आदि देने का कार्य है।''6 सम्पादक विखेमस्टीड (म ेंं)– ''पत्रकारिता, कला, वृत्ति तथा जनसेवा है।''7 डॉ. संजीव भानावत–''पत्रकारिता– समाचारा ें के स ंकलन, चयन, विश्लेषण तथा

सम्प्रेषण की प्रक्रिया है। समय और समाज के स ंदर्भ मे ं सजग रहकर नागरिकों में दायित्व बोध कराने की कला को पत्रकारिता कहते है।''8 डॉ. अर्जुन तिवारी– भगवद्गीता में जगह–जगह पर 'शुभदृष्टि' का प्रयोग है। यह शुभदृष्टि ही पत्रकारिता है जिसमें गुणों को परखना तथा मंगलकारी तत्वों को प्रकाश में लाना सम्मिलित है।''

पत्रकारिता के विविध आयाम :

पत्रकारिता अपने आसपास की चीजों, घटनाओं और लोगों के बारे में ताजा जानकारी रखना मनुष्य का सहज स्वभाव है। उसमें जिज्ञासा का भाव बहुत प्रबल होता है। यही जिज्ञासा समाचार और व्यापक अर्थ में पत्रकारिता का मूल तत्व है। जिज्ञासा नहीं रहेगी तो समाचार की भी जरूरत नहीं रहेगी। पत्रकारिता का विकास इसी सहज जिज्ञासा को शांत करने की कोशिश के रूप में हुआ। वह आज भी इसी मूल सिद्धांत के आधार पर काम करती है।

पत्रकारिता के विविध आयाम :

पत्रकारिता अपने आसपास की चीजों, घटनाओं और लोगों के बारे में ताजा जानकारी रखना मनुष्य का सहज स्वभाव है। उसमें जिज्ञासा का भाव बहुत प्रबल होता है। यही जिज्ञासा समाचार और व्यापक अर्थ में पत्रकारिता का मूल तत्व है। जिज्ञासा नहीं रहेगी तो समाचार की भी जरूरत नहीं रहेगी। पत्रकारिता का विकास इसी सहज जिज्ञासा को शांत करने की कोशिश के रूप में हुआ। वह आज भी इसी मूल सिद्धांत के आधार पर काम करती है।

पत्रकारिता क्या है?

हम सूचनाएँ या समाचार जानना चाहते हैं। क्योंकि सूचनाएँ अगला कदम तय करने में हमारी सहायता करती हैं। इसी तरह हम अपने पास–पड़ोस, शहर, राज्य और देश–दुनिया के बारे में जानना चाहते हैं। ये सूचनाएँ हमारे दैनिक जीवन के साथ–साथ पूरे समाज को प्रभावित करती हैं। आज देश–दुनिया में जो कुछ हो रहा है, उसकी अधिकांश जानकारी हमें

समाचार माध्यमों से मिलती है। हमारे प्रत्यक्ष अनुभव से बाहर की दुनिया के बारे में हमें अधिकांश जानकारी समाचार माध्यमों द्वारा दिए जाने वाले समाचारों से ही मिलती है।

समाचार

विभिन्न समाचार माध्यमों के जरिये दुनियाभर के समाचार हमारे घरों में पहुँचते हैं। समाचार संगठनों में काम करने वाले पत्रकार देश–दुनिया में घटने वाली घटनाओं को समाचार के रूप में परिवर्तित करके हम तक पहुँचाते हैं। इसके लिए वे रोज सूचनाओं का संकलन करते हैं और उन्हें समाचार के प्रारूप में ढालकर प्रस्तुत करते हैं। इस पूरी प्रक्रिया को ही पत्रकारिता कहते हैं।

समाचार की कुछ परिभाषाएँ

1. प्रेरक और उत्तेजित कर देने वाली हर सूचना समाचार है।
2. समय पर दी जाने वाली हर सूचना समाचार का रूप धारण कर लेती है।
3. किसी घटना की रिपोर्ट ही समाचार है।
4. समाचार जल्दी में लिखा गया इतिहास है?

समाचार क्या है?

हर सूचना समाचार नहीं है यानी हर सूचना समाचार माध्यमों में प्रकाशित या प्रसारित नहीं होती है। मित्रों, रिश्तेदारों और सहकर्मियों से आपसी कुशलक्षेत्र और हालचाल का आदान–प्रदान समाचार माध्यमों के लिए समाचार नहीं है। इसकी वजह यह है कि आपसी कुशलक्षेम हमारा व्यक्तिगत मामला है। हमारी नजदीकी लोगों के अलावा अन्य किसी की उसमें दिलचस्पी नहीं होगी।

दरअसल, समाचार माध्यम कुछ लोगों के लिए नहीं, बल्कि अपने हजारों–लाखों पाठकों, श्रोताओं और दर्शकों के लिए काम करते हैं। स्वाभाविक है कि वे समाचार के रूप में उन्हीं घटनाओं, मुद्दों और समस्याओं को चुनते हैं जिन्हें जानने में अधिक से अधिक लोगों की रुचि होती है। यहाँ हमारा आशय उस तरह के समाचारों से है जिनका किसी न किसी रूप में सार्वजनिक महत्त्व होता है। ऐसे समाचार अपने समय के विचार, घटना और समस्याओं के बारे में लिखे जाते हैं। ये समाचार ऐसी सम–सामयिक घटनाओं, समस्याओं और विचारों पर आधारित होते हैं जिन्हें जानने की अधिक से अधिक लोगों में दिलचस्पी होती है और जिनका अधिक से अधिक लोगों के जीवन पर प्रभाव पड़ता है।

इसके बावजूद ऐसा कोई फार्मूला नहीं है जिसके आधार पर यह कहा जाए कि यह घटना समाचार है और यह नहीं। पत्रकार और समाचार संगठन ही किसी भी समाचार के चयन, आकार और उसकी प्रस्तुति का निर्धारण करते हैं। यही कारण है कि समाचारपत्रों और समाचार चौनलों में समाचारों के चयन और प्रस्तुति में इतना फर्क दिखाई पड़ता है। एक समाचारपत्र में एक समाचार मुख्य समाचार (लीड स्टोरी) हो सकता है और किसी अन्य समाचारपत्र में वही समाचार भीतर के पृष्ठों पर कहीं एक कॉलम का समाचार हो सकता है। किसी घटना, समस्या और विचार में कुछ ऐसे तत्व होते हैं जिनके होने पर उसके समाचार बनने की संभावना बढ़ जाती है। उन तत्त्वों को लेकर समाचार माध्यमों में एक आम सहमति है। समाचार को इस तरह परिभाषित किया जा सकता है दृ समाचार किसी भी ऐसी ताजा घटना, विचार या

समस्या की रिपोर्ट है जिसमें अधिक से अधिक लोगों की रुचि हो और जिसका अधिक से अधिक लोगों पर प्रभाव पड़ रहा हो।

दरअसल, समाचार माध्यमों के उपभोक्ता यानी पाठक, दर्शक और श्रोता अपने मूल्यों, रुचियों और दृष्टिकोणों में बहुत विविधताएँ और भिन्नताएँ लिए होते हैं। इन्हीं के अनुरूप उनकी सूचना प्राथमिकताएँ भी निर्धारित होती हैं। परंपरागत पत्रकारिता के मानदंडों के अनुसार समाचार मीडिया को लोगों की सूचनाओं की जरूरत और माँग के बीच संतुलन कायम करना पड़ता है। कुछ घटनाएँ ऐसी होती हैं जिनके बारे में हमें जानकारी होना आवश्यक है और कुछ घटनाएँ ऐसी भी होती हैं जिनके बारे में जानकारी न भी हो तो कोई फर्क नहीं पड़ता, अलबत्ता उन्हें पढ़कर या सुनकर या देखकर हमें मजा आता है। इन दिनों समाचार माध्यमों में मजेदार और मनोरंजक समाचारों को प्राथमिकता देने का रुझान प्रबल हुआ है।

उपसंहार

इस लेख्य में सभी अध्यायों का संक्षिप्त वर्णन किया गया है, जिसमें मौलिक तथ्यों को दर्शाते हुए नवीन शोध कार्यो का संक्षिप्त में उल्लेख किया गया है। वर्तमान में राजस्थान के संदर्भ में हिन्दी पत्रकारिता का जनचेतना में महत्त्वपूर्ण योगदान है पर उसमें अभी और सुधार की आवश्यकता है। निष्कर्षतः शोधार्थी का उद्देश्यवएक संदेश है कि हिन्दी पत्रकारिता का गुणात्मक स्तर मे ं सुधार हो ताकि वह जनचेतना के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे सके। प्रस्तुत शोध के माध्यम से शोधार्थी के द्वारा एक नवीन, रुचिपूर्णव शोधपरक जानकारी देने का प्रयास किया गया है, जिसका केवल यही उद्देश्य है कि पाठकों के समक्ष हिन्दी पत्रकारिता का वह स्वर्णिम युग शुरु हो जो जनचेतना के विकास में अपना महत्त्वपूण र्व अतुलनीय योगदान दे तथा हमें इस बात का गर्व हो कि राजस्थान की हिन्दी पत्रकारिता जनचेतना में अपना महत्त्वपूण र्स्थान रखती है। यह पाठकों, पत्रकारों, भाषायी विद्वानों व समाज के कर्णधारों के प्रयास एवं सहयोग से ही स ंभव है।

सन्दर्भ–ग्रन्थ–सूची

1. अगनानी, कन्हैया, पत्रकारिता के मूल सिद्धान्त, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 1999
2. अग्रवाल, हरिप्रसाद, राजस्थानी आजादी के दीवाने, प्रताप प्रकाशन, श्यामजी कृष्ण वर्मा पुस्तकालय, ब्यावर
3. आचार्य दाऊदयाल, भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बीकानेर का योगदान, चेतना प्रकाशन, बीकानेर, 1997
4. आसोपा, आरके, मारवाड़ का मूल इतिहास भाग–1, वैदिक यंत्रालय, अजमेर, 1938
5. आसोपा, आरके, मारवाड़ का मूल इतिहास, भाग–2, वैदिक यंत्रालय, अजमेर, 1941
6. आर्य, हरफूल सिंह, शेखावाटी के ठिकानों का इतिहास व योगदान, जयपुर, 1987
7. ओझा, गौरीश ंकर हीराचंद, राजपूताना का प्राचीन इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
8. ओझा, गौरीश ंकर हीराचंद, राजपूताने का इतिहास, राजस्थानी ग्र ंथागार, जा ेधपुर
9. ओझा, हीराचन्द गौरीशकर, जोधपुर राज्य का इतिहास भाग–1, 2, वैदिक यंत्रालय, अजमेर, 1938–41

10. ओझा, जे. के., बीकानेर राज्य का इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार, जयपुर 1936

11. कविराज, श्यामलदास, वीर विनोद, जिल्द 1–4, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2008

12. कर्दम, जयप्रकाश, 21वी ं सदी में दलित आन्दोलन, पंकज पुस्तक मंदिर, दिल्ली, 2000

13. कालेलकर, काकासाहब, जमनालाल बजाज की डायरी, जमनालाल बजाज सेवा ट्रस्ट, वर्धा, 1966